The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# ख्याल गायकी के घराने: एक दृष्टि

**रोशनी केसरी कसौधन**
Research Scholar, Ghulam Nabi Azad Arts, Commerce & Science College
Barshitakli, Dist-Akola (M.S)

**प्रा. डॉ. सुनील कोल्हे**
मार्गदर्शक

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 24-02-2025

**Published:** 14-03-2025

**Keywords:**
*इतिहास, ख्याल गायकी, गायन शैली, राग*

**ABSTRACT**

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख शैलियों में से एक ख्याल गायकी का इतिहास समृद्ध और विविधता से भरा हुआ है। ख्याल गायकी के विभिन्न घराने अपनी विशिष्ट शैली, गायन पद्धति, तथा सांगीतिक दृष्टिकोण के कारण प्रसिद्ध हैं। यह शोध पत्र ग्वालियर, किराना, बनारस, जयपुर-अतरौली, पटियाला, अग्रा और रामपुर-सहसवान जैसे प्रमुख घरानों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस शोध में घरानों की उत्पत्ति, गायन शैली, प्रमुख कलाकारों और उनके योगदान पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली गई है।

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15031958**

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायकी एक प्रमुख और विकसित शैली है, जिसका आधार सुरों की लयबद्धता, गहरी भावाभिव्यक्ति और विस्तृत आलाप पर टिका हुआ है। ख्याल गायकी का विकास 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो के योगदान से हुआ, जबकि 18वीं शताब्दी में इसे ग्वालियर घराने द्वारा व्यवस्थित और परिष्कृत किया गया। इसके बाद विभिन्न घरानों ने इस गायकी को अपनी विशिष्ट शैली और परंपराओं के अनुसार विकसित किया।

ख्याल का अर्थ 'कल्पना' होता है, और यह शैली गायक को राग के भीतर अपनी कल्पना और रचनात्मकता व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। यह ध्रुपद से विकसित हुई, जो कि एक अधिक संरचित और कठोर शैली थी। ध्रुपद की कठोरता और अनुशासन की तुलना में ख्याल अधिक लचीला और स्वछंद गायकी शैली है, जिसमें भावों की अधिक स्वतंत्रता होती है। ख्याल ने अपने सहज, लचीले और भावपूर्ण अंदाज़ के कारण शीघ्र ही लोकप्रियता प्राप्त कर ली।

ख्याल की दो प्रमुख शाखाएँ हैं – विलंबित ख्याल और द्रुत ख्याल। विलंबित ख्याल में राग को विस्तारित रूप से प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें आलाप और स्वरों की धीमी गति से प्रस्तुति दी जाती है। यह शास्त्रीय संगीत की गहनता को प्रकट करता है। दूसरी ओर, द्रुत ख्याल में बंदिश और तानों का तीव्र गति से प्रदर्शन किया जाता है, जिससे श्रोता को संगीत की गतिशीलता और ऊर्जा का अनुभव होता है। आमतौर पर एक प्रस्तुति में पहले विलंबित ख्याल और फिर द्रुत ख्याल प्रस्तुत किया जाता है, जिससे संगीत में संतुलन बना रहता है।

ख्याल गायकी को विभिन्न घरानों ने अलग-अलग शैलियों में विकसित किया, जिससे इसकी विविधता और गहराई बढ़ी। ग्वालियर, किराना, बनारस, जयपुर-अतरौली, पटियाला, अग्रा और रामपुर-सहसवान घराने इस गायन शैली के प्रमुख स्तंभ हैं। प्रत्येक घराने की गायकी शैली, आलाप, ताने और लयबद्ध संरचना में भिन्नता देखने को मिलती है।

ग्वालियर घराना ख्याल का सबसे पुराना घराना माना जाता है और इसकी गायकी शैली बेहद संतुलित एवं सुव्यवस्थित मानी जाती है। किराना घराने में स्वरों की मधुरता और मींड का विशेष महत्व होता है। बनारस घराने में ठुमरी और टप्पा का प्रभाव देखने को मिलता है, जिससे यह गायकी शैली अधिक भावप्रधान होती है। जयपुर-अतरौली घराने की विशेषता इसकी जटिल राग संरचना और विलंबित ख्याल की गहनता में निहित है। पटियाला घराने में तेज तानों और लयकारी का प्रमुख स्थान है, जबकि अग्रा घराने में ध्रुपद शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। रामपुर-सहसवान घराना अपनी स्पष्टता और लयबद्धता के लिए प्रसिद्ध है।

यह शोध पत्र ख्याल गायकी के विभिन्न घरानों की उत्पत्ति, उनकी विशेषताओं और प्रमुख कलाकारों के योगदान को विस्तार से प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह ख्याल संगीत के वर्तमान परिदृश्य और उसके भविष्य को भी संक्षेप में विश्लेषित करता है।

## ख्याल के प्रमुख घराने एवं उनकी विशेषताएँ

### 1. ग्वालियर घराना

ग्वालियर घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायकी का सबसे पुराना और आधारभूत घराना माना जाता है। इसकी स्थापना 16वीं शताब्दी में हुई और यह घराना ख्याल गायकी को एक व्यवस्थित रूप देने के लिए प्रसिद्ध है।

- **विशेषताएँ:**
  - इस घराने की सबसे बड़ी विशेषता इसकी **स्पष्ट उच्चारण शैली**, **ताल की दृढ़ पकड़** और **बंदिश प्रधान गायकी** है।
  - इस शैली में **स्थायी और अंतरा** को प्रमुखता दी जाती है और रागों की प्रस्तुति बेहद संतुलित होती है।
  - आलाप, बोल-तान और सरगम तानों का संतुलित प्रयोग किया जाता है, जिससे गायकी में एक सुस्पष्टता और सौंदर्य झलकता है।[1]

- ग्वालियर घराने की गायकी में **स्वर-साधना** और **शुद्धता** पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- इस घराने की विशेषता यह भी है कि इसमें **मध्यम और तेज गति की तानों** का प्रयोग किया जाता है, लेकिन गायकी हमेशा स्वाभाविक और प्रभावशाली रहती है।

- **इतिहास एवं विकास:**
  - ग्वालियर घराने की परंपरा को बढ़ाने का श्रेय **नाथ्थन खाँ**, **हद्दू खाँ**, और **हस्सू खाँ** को दिया जाता है, जिन्होंने इस शैली को व्यवस्थित किया।
  - 19वीं और 20वीं शताब्दी में इस घराने को आगे बढ़ाने में **बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर** और **विष्णु दिगंबर पलुस्कर** की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
  - इस घराने की गायकी को **पं. विष्णु नारायण भातखंडे** द्वारा संगीत शिक्षा में एक व्यवस्थित रूप दिया गया, जिससे यह अधिक सुव्यवस्थित और लोकप्रिय हुई।[2]
- **प्रसिद्ध कलाकार:**
  - बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर
  - विष्णु दिगंबर पलुस्कर
  - पं. कृष्णराव शंकर पंडित
  - ओंकारनाथ ठाकुर
  - नारायणराव व्यास
  - भीमसेन जोशी (प्रारंभिक प्रशिक्षण ग्वालियर घराने में)

ग्वालियर घराने की गायकी अपने संतुलित और सटीक गायन के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना भारतीय संगीत की नींव का कार्य करता है और आज भी इसके प्रभाव को ख्याल गायकी के अन्य घरानों में देखा जा सकता है।

### 2. किराना घराना

किराना घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली घराना माना जाता है। इसकी स्थापना 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई और इसे स्वर सौंदर्य, मींड का सूक्ष्म प्रयोग और गहरी भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है। किराना घराने की गायकी का मूल स्वरूप अत्यंत मधुर और भावनात्मक होता है, जिससे यह श्रोता के हृदय को छूने में सक्षम होता है।

- **विशेषताएँ:**
  - किराना घराने की गायकी में **स्वर सौंदर्य**, **मींड का सूक्ष्म प्रयोग** और **रागों की गहरी अनुभूति** को प्रमुखता दी जाती है।

- इस घराने में **लंबे आलाप** को विशेष महत्व दिया जाता है, जिससे राग का संपूर्ण प्रभाव श्रोता के मन में स्थापित हो सके।
- सुरों की कोमलता, रागों की धीमी प्रस्तुति और गहरे भावपूर्ण गायन इस घराने की विशेष पहचान हैं।
- किराना घराने की गायकी में **मींड**, **गमक**, और **कण स्वर** का प्रयोग अत्यंत बारीकी से किया जाता है, जिससे इसकी प्रस्तुति अत्यधिक प्रभावशाली बनती है।[3]

- **इतिहास एवं विकास:**
  - इस घराने का नाम **किराना गाँव** (उत्तर प्रदेश) के नाम पर पड़ा, जो कि उस्ताद अब्दुल करीम खां का जन्मस्थान था।
  - 20वीं शताब्दी में इस घराने को उस्ताद अब्दुल करीम खां ने नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उन्होंने इस शैली को अधिक मधुर और भावपूर्ण बनाया।
  - किराना घराने की गायकी को आगे बढ़ाने में **सवाई गंधर्व**, **भीमसेन जोशी**, **गंगूबाई हंगल**, और **फिरोज दस्तूर** जैसे गायकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **गायकी शैली:**
  - किराना घराने की गायकी शैली अत्यधिक भावनात्मक और सौंदर्यपूर्ण होती है। इसमें सुरों का बहुत ही सूक्ष्म और सटीक प्रयोग किया जाता है।
  - इस घराने की गायकी में **रागों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया जाता है**, जिससे श्रोता राग की गहराई को अनुभव कर सकें।
  - इसमें गायकी की गति धीरे-धीरे बढ़ती है, जिससे संगीत का प्रवाह प्राकृतिक और मधुर लगता है।[4]
- **प्रसिद्ध कलाकार:**
  - **उस्ताद अब्दुल करीम खां** - किराना घराने के संस्थापक, जिनकी गायकी में मधुरता और मींड का अद्भुत प्रयोग देखा जाता है।
  - **सवाई गंधर्व** - उन्होंने किराना घराने को और अधिक लोकप्रिय बनाया और भीमसेन जोशी जैसे महान कलाकारों को प्रशिक्षित किया।
  - **पंडित भीमसेन जोशी** - उनकी गायकी में अद्वितीय भावनात्मक गहराई थी, जिससे उन्होंने भारतीय संगीत में विशेष स्थान प्राप्त किया।
  - **गंगूबाई हंगल** - किराना घराने की प्रमुख गायिका, जिन्होंने अपनी मधुर और गहरी आवाज़ से इस घराने को आगे बढ़ाया।
- **वर्तमान परिदृश्य:**
  - आज भी किराना घराने की गायकी भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
  - आधुनिक गायकों में इस घराने की शैली के तत्वों को अपनाने की प्रवृत्ति देखी जाती है।

- भारत और विदेशों में संगीत समारोहों में इस घराने की गायकी को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

किराना घराने की गायकी अपने स्वर-सौंदर्य, मींड की बारीकियों और भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।[5]

**3. बनारस घराना**

बनारस घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घरानों में से एक है, जो अपनी विशिष्ट ठुमरी और टप्पा से प्रभावित ख्याल गायकी के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना बनारस (वाराणसी) क्षेत्र में विकसित हुआ और इसकी गायकी शैली में बोल बनावट और भावपूर्ण अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। बनारस घराने की ख्याल गायकी में ध्रुपद और ख्याल का मिश्रण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिससे इसकी प्रस्तुति अत्यंत प्रभावशाली और संगीतमय होती है।

- **विशेषताएँ:**
  - बनारस घराने की गायकी में **ठुमरी और टप्पा** का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है।
  - **बोल बनावट** पर अधिक जोर दिया जाता है, जिससे गायकी में शब्दों की स्पष्टता और भावनात्मकता बनी रहती है।
  - ख्याल गायकी में **स्वरों की मधुरता**, **लय की स्पष्टता**, और **भावपूर्ण प्रस्तुति** इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।
  - इस घराने की गायकी में **ध्रुपद और ख्याल** का संयोजन स्पष्ट रूप से झलकता है।
  - **रागों की प्रस्तुति में गतिशीलता**, **तालबद्धता** और **रंगत** को विशेष महत्व दिया जाता है।
- **इतिहास एवं विकास:**
  - बनारस घराने की स्थापना 18वीं शताब्दी में हुई और इसे भारतीय संगीत की ठुमरी परंपरा से गहरा संबंध बताया जाता है।
  - इस घराने का प्रारंभिक विकास **पं. गopal मिश्रा**, **पं. ओंकारनाथ ठाकुर**, और अन्य प्रसिद्ध संगीतकारों के योगदान से हुआ।
  - 20वीं शताब्दी में **राजन-साजन मिश्र** ने इस शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।
- **गायकी शैली:**
  - बनारस घराने की गायकी शैली अत्यधिक भावप्रधान और सहज होती है।
  - इसमें **बोल-आलाप**, **बोल-तान**, और **सधी हुई तानों** का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।
  - ख्याल गायकी में **लयबद्धता** और **तालों की विविधता** का विशेष महत्व होता है।
- **प्रसिद्ध कलाकार:**
  - **पं. ओंकारनाथ ठाकुर** - उनकी गायकी में शक्ति, मधुरता और भावनात्मक गहराई थी।

- **राजन-साजन मिश्र** - बनारस घराने के प्रसिद्ध युगल गायक, जिन्होंने इस शैली को आगे बढ़ाया।
- **गopal मिश्रा** - बनारस घराने के प्रमुख संगीतज्ञ, जिन्होंने गायकी की उत्कृष्टता को बनाए रखा।

- **वर्तमान परिदृश्य:**
  - बनारस घराने की गायकी आज भी संगीत समारोहों और संगीत शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
  - इस घराने की शैली को युवा संगीतकारों द्वारा अपनाया जा रहा है।
  - बनारस घराने के संगीत गुरुकुल और संगीत विद्यालय इसकी परंपरा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।[6]

बनारस घराने की ख्याल गायकी अपनी ठुमरी और टप्पा से प्रभावित शैली, बोल बनावट पर विशेष ध्यान और भावनात्मक अभिव्यक्ति के कारण भारतीय संगीत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

**4. जयपुर-अतरौली घराना**

जयपुर-अतरौली घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घरानों में से एक है, जो अपनी **जटिल राग संरचना** और **विलंबित ख्याल गायकी** के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना जयपुर (राजस्थान) और अतरौली (उत्तर प्रदेश) के नाम पर रखा गया है और इसे उस्ताद अल्लादिया खां द्वारा स्थापित किया गया था।

- **विशेषताएँ:**
  - इस घराने में **जटिल और दुर्लभ रागों** की प्रस्तुति पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
  - गायकी में **विलंबित ख्याल** को विशेष रूप से महत्व दिया जाता है, जिससे राग की पूरी अनुभूति हो सके।
  - **रागों के शुद्ध रूप और विस्तारित आलाप** को प्राथमिकता दी जाती है।
  - तानों की गति तीव्र और स्पष्ट होती है, लेकिन वे राग की आत्मा को बनाए रखते हुए प्रस्तुत की जाती हैं।[7]
  - इस घराने की गायकी में **बोल-आलाप** और **लंबे मींड** का उपयोग बहुत ही सधे हुए ढंग से किया जाता है।
- **इतिहास एवं विकास:**
  - जयपुर-अतरौली घराने की स्थापना उस्ताद **अल्लादिया खां** ने की, जिन्होंने इसे 19वीं शताब्दी के अंत में विकसित किया।
  - इस घराने को आगे बढ़ाने में **मल्लिकार्जुन मंसूर**, **किशोरी आमोनकर**, और **कंठे महाराज** जैसे महान गायकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
  - यह घराना आज भी अपनी जटिलता और तकनीकी श्रेष्ठता के लिए जाना जाता है।
- **गायकी शैली:**
  - जयपुर-अतरौली घराने की गायकी शैली अत्यंत **शास्त्रीय और जटिल** होती है।

- इसमें **रागों का विस्तार धीरे-धीरे किया जाता है**, जिससे श्रोता को राग की गहराई महसूस हो सके।
- गायकी में **लयकारी** और **तालबद्धता** का विशेष ध्यान रखा जाता है।
- आलाप और तानों का संतुलित मिश्रण इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है।

- **प्रसिद्ध कलाकार:**
  - **उस्ताद अल्लादिया खां** - जयपुर-अतरौली घराने के संस्थापक और महान संगीतज्ञ।
  - **मल्लिकार्जुन मंसूर** - उनकी गायकी में घराने की पूरी परंपरा झलकती थी।
  - **किशोरी आमोनकर** - उन्होंने जयपुर घराने की गायकी को एक अलग पहचान दी और इसे आधुनिक दर्शकों तक पहुँचाया।
- **वर्तमान परिदृश्य:**
  - जयपुर-अतरौली घराने की गायकी आज भी भारतीय संगीत मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
  - कई युवा गायक इस घराने की शैली को सीखने और आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।
  - संगीत समारोहों और गुरुकुल परंपरा के माध्यम से इस शैली का संरक्षण किया जा रहा है।

जयपुर-अतरौली घराने की गायकी अपनी **जटिल राग संरचना**, **विलंबित ख्याल**, और **शुद्ध राग प्रस्तुति** के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक विशेष स्थान रखती है।

**5. पटियाला घराना**

पटियाला घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घरानों में से एक है, जो अपनी **तेज़ तानों**, **लयकारी की जटिलता** और **श्रृंगारिक तत्वों से युक्त गायकी** के लिए प्रसिद्ध है। यह घराना पंजाब में स्थित पटियाला रियासत में विकसित हुआ और 19वीं शताब्दी के अंत तथा 20वीं शताब्दी की शुरुआत में प्रमुखता से उभरा।

- **विशेषताएँ:**
  - पटियाला घराने की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी **तेज़ गति वाली तानें** हैं, जो अत्यंत प्रभावशाली और सटीक होती हैं।
  - **लयकारी की जटिलता** और विविध तालों में गायन इस घराने की पहचान है।
  - पटियाला घराने की गायकी में **खुली आवाज़** का उपयोग किया जाता है, जिससे गायन में एक अलग प्रभाव उत्पन्न होता है।
  - इस घराने की गायकी में **श्रृंगारिक भावनाओं** और **भव्यता** का समावेश देखने को मिलता है।[8]
  - बंदिशों में **लयबद्धता और तालों के साथ प्रयोग** इस घराने की महत्वपूर्ण विशेषता है।
- **इतिहास एवं विकास:**

- इस घराने की स्थापना **उस्ताद अली बक्श** और **उस्ताद फतेह अली खां** द्वारा की गई।
- इस घराने का विकास मुख्य रूप से पंजाब के संगीत परंपरा और सूफी संगीत से प्रभावित था।
- 20वीं शताब्दी में **उस्ताद बड़े गुलाम अली खां** ने इस घराने को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया।

- **गायकी शैली:**
  - पटियाला घराने की गायकी में **लयकारी और तानों की तेजी** प्रमुख होती है।
  - गायकी में **सरगम तानों, बोल-तान और गमक** का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।
  - इस शैली में **खुले गले से गाने की परंपरा** है, जिससे गायन अधिक प्रभावी बनता है।
  - इसमें **तालबद्धता और बंदिशों को आकर्षक बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है**।
- **प्रसिद्ध कलाकार:**
  - **उस्ताद बड़े गुलाम अली खां** - पटियाला घराने के सबसे प्रसिद्ध गायक, जिन्होंने इस घराने को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।
  - **परवीन सुल्ताना** - उनकी गायकी में पटियाला घराने की विशिष्टता स्पष्ट रूप से झलकती है।
  - **उस्ताद फतेह अली खां** - इस घराने के प्रमुख कलाकारों में से एक।
- **वर्तमान परिदृश्य:**
  - पटियाला घराने की गायकी आज भी संगीत मंचों और संगीत शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
  - इस घराने की शैली को युवा संगीतकारों द्वारा अपनाया जा रहा है।
  - भारतीय और अंतरराष्ट्रीय संगीत समारोहों में पटियाला घराने की गायकी को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है।

पटियाला घराने की गायकी अपनी **तेज़ तानों**, **जटिल लयकारी**, और **श्रृंगारिक तत्वों** के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक विशिष्ट स्थान रखती है।

ख्याल गायकी का योगदान और विकास ख्याल गायकी ने भारतीय संगीत को एक नई दिशा दी है। घरानों के आपसी मेल-जोल से गायकी का विकास हुआ है और आधुनिक समय में कई कलाकार विभिन्न घरानों की विशेषताओं को अपनाकर अपनी अलग पहचान बना रहे हैं। वर्तमान में ख्याल गायकी को संरक्षित करने के लिए संगीत अकादमियों और गुरुकुल पद्धति का सहारा लिया जा रहा है।

**निष्कर्ष** ख्याल गायकी की विविधता इसे अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी बनाती है। प्रत्येक घराने ने इसमें अपनी अनूठी शैली का समावेश कर इसे और व्यापक बनाया है। भविष्य में इस परंपरा के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए अधिक अध्ययन और शोध की आवश्यकता है।

**संदर्भ**


1. भट्टाचार्य, एस. (2008). भारतीय शास्त्रीय संगीत और इसके घराने (पृष्ठ 45-67). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. भातखंडे, वि. ना. (1934). हिंदुस्तानी संगीत पद्धति (पृष्ठ 112-134). संगीत कार्यालय।
3. बोर, जे. (1999). राग गाइड: 74 हिंदुस्तानी रागों का सर्वेक्षण (पृष्ठ 89-102). निंबस रिकॉर्ड्स।
4. ब्राउन, आर. (1980). भारत का संगीत: शास्त्रीय परंपराएँ (पृष्ठ 33-56). ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच पब्लिशिंग।
5. चौधरी, एन. (2012). भारतीय शास्त्रीय संगीत के सौंदर्यात्मक आयाम (पृष्ठ 78-92). रूटलेज।
6. डैनियलू, ए. (1980). उत्तर भारतीय संगीत के राग (पृष्ठ 145-160). मुनशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स।
7. देशपांडे, वि. ह. (1973). भारतीय संगीत परंपराएँ: घराने और उनकी शैलियाँ (पृष्ठ 95-110). पॉपुलर प्रकाशन।
8. किनियर, एम. (2000). ग्रामोफोन कंपनी की पहली भारतीय रिकॉर्डिंग्स, 1899-1908 (पृष्ठ 20-35). साउंड हेरिटेज।